चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

1 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2023 तक कपास की खेती के लिए सुझाव

सस्य क्रियाएँ

- सितंबर माह कपास की फसल के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस समय फसल में बहुत फूल, बोकी व टिंडे होंगे। रेतीली मिट्टी वाले इलाकों में पोषक तत्वों की सर्वाधिक कमी अभी महसूस की जाएगी इसलिए जो फसल 100 दिन से कम की है या उसके आसपास है वहां जिंक व यूरिया 100 लीटर पानी में दो से ढाई किलो यूरिया व तीन सौ ग्राम जिंक (33 प्रतिशत वाला) उस का घोल बनाकर स्प्रे करें।
- जो कपास 120 दिन से ऊपर हो गई है वहां 13 0 45 के दो पैकेट प्रति एकड़ के हिसाब से स्प्रे करें ।
- जो कपास ड्रिप पर लगाई हुई है उसमें ड्रिप के द्वारा पोषक तत्व दिए जाएं।
- जब दो तिहाई टिंडे पौधों पर तैयार हो जाए उसके बाद अपनी फसल में खुला पानी ना लगाएं। ड्रिप व फव्वारा पद्धति के तहत पानी लगा सकते हैं लेकिन इसमें दिन बढ़ा दिए जाएं।

कीट प्रबंधन

- **सितम्बर के महीने में गुलाबी सुंडी का प्रकोप नरमा की फसल में पाया जाता हैं। अतः इस महीने में अपनी फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की निगरानी जरूर करें ।**
- **इसके लिए सप्ताह में दो बार नरमा फसल में 100 फूलों का निरक्षण करें। इसके अलावा सप्ताह में एक बार अपनी फसल से 20 टिंडे (1 टिंडा एक पौधे से, जो 10–15 दिनों पुराना हो) खेत में अलग अलग जगह से तोड़कर उनको फाड़कर निरिक्षण करें।**
- इसमें से यदि 5–10 फूल गुलाबी सुंडी से ग्रसित मिलते हैं या 20 टिन्डो को फाड़कर देखने पर 1–2 टिन्डो में जीवित गुलाबी सुंडी मिलती हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।
- इसके अलावा गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमे फसने वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। मध्य अगस्त से अक्टूबर तक यदि इनमें कुल 24 पतंगे प्रति ट्रैप तीन रातों में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता हैं।
- 90 से 120 दिनों की **फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5–10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी की 800 मिलीलीटर मात्रा 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरुरत पड़ने पर क्यूनालफास 25** (एकालक्स) **ई सी की 800–900 मिलीलीटर या थिओडिकार्ब 75 डब्लू. पी. की 250–300 ग्राम मात्रा 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से 10-12 दिनों बाद करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग बार बार न करें।**
- 120 दिनों से ऊपर की फसल में 80 से 100 मिलीलीटर साइपरमेथ्रिन 25 ई सी अथवा 160 से 200 मिलीलीटर डेकामेथरीन 2.8 ई सी अथवा 125 मिलीलीटर फेनवलरेट 20 ई सी को 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से 7–10 दिनों के अन्तराल पर करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग बार बार न करें।
- देसी कपास में इस माह चित्तीदार सुंडी का प्रकोप होता हैं, अतः अपनी फसल की निगरानी रखें। चित्तीदार सुंडी का प्रकोप फलिय भागों पर 5 प्रतिशत मिलने पर एक छिड़काव 75 मिलीलीटर स्पाइनोसैड (ट्रैसर) 45 एस सी को 150–175 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से करें।
- सितम्बर माह में नरमा की फसल में सफेद मक्खी वं हरे तेला का भी प्रकोप होता हैं इसलिए इनकी निगरानी सप्ताह में दो बार करें। इसके लिए एक एकड़ से 20 पौधों की तीन पत्तियां (एक ऊपर, एक बीच एवं एक नीचे की) पर सफेद मक्खी के व्यस्क एवं हरे तेला के शिशु की गिनती करके प्रति पत्ता औसत निकल लें।
- सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रत्ति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा या एफिडोपाईरोपेन (सैफीना) 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा को प्रति 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से एक छिड़काव करें।

- सफेद मक्खी का ज्यादा प्रकोप होने पर इसके प्रबंधन के लिए पाईरीप्रोक्सिफेन (डायटा) 10 ई सी की 400 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें तथा आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 10–12 दिनों के बाद स्पिरोमेसिफेन (ओबेरॉन) 240 एस. सी. की 240 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से करें।
- बरसात के मौसम में स्प्रै के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डवित, सेलवेट 99 या टीपोल की 60–80 मिलीलीटर या ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं।
- नरमा की फसल में ज्यादा जहरीले कीटनाशकों या कीटनाशकों के मिश्रण का प्रयोग ना करे ऐसा करने से मित्र कीटों की संख्या कम हो जाती है तथा रस चूसने वाले कीड़ों की समस्या बढ़ने लगती है।

रोग प्रबंधन

- पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें ।
- टिंडा गलन रोग पर नियंत्रण के लिए सुंडी नियंत्रण वाली सिफारिश की गयी दवाई के साथ कॉपर ऑक्सिक्लोराइड या बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें ।
- जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें परंतु पौधे सूख जाने दवा का असर नहीं होगा ।
- जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें, ताकि बीमारियों को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बेंडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 100 – 200 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें । जड़ गलन रोग के लिए दवाई डालते समय किसान भाई पीठ वाले स्प्रे पंप का प्रयोग करते समय मोटे फव्वारे का प्रयोग करके जड़ों के पास इस फफूंदनाशक घोल को डालें।
- कपास के तिड़क रोग से टिंडे ठीक तरह से नही खुलते। यह रोग हरियाणा के पश्चिमी इलाकों में कभी कभी लगने लगता है। रेतीली जमीनों में नाइट्रोजन की कमी के कारण कपास के पत्तों का रंग लाल पड जाता है एवम बढ़वार रुक जाती है। फूल तथा टिंडे लगने के समय आवश्यकतानुसार खाद डालने व पानी देने से जमीन के तापमान में कमी आती है और इस रोग की रोकथाम में आसानी होती है।

अन्य सलाह

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा समय समय पर जारी मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर ही कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का प्रयोग करें।

इसके अतिरिक्त कोई भी संशय होने पर निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9992911570

कपास अनुभाग

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय हिसार